UP Board Notes for Class 9 Hindi Chapter 2 मीराबाई (काव्य-खण्ड)

1. बसो मेरे नैनन में ..... भक्त बछल गोपाल।
शब्दार्थ- मकराकृत = मछली के आकार के। **छुद्र** = छोटी। **रसाल** = मधुर । **भक्त-बछल** = भक्त-वत्सल।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका **मीराबाई** के काव्य-ग्रन्थ **'मीरा-सुधा-सिन्धु'** के अन्तर्गत **'पदावली'** शीर्षक से अवतरित है।
प्रसंग- प्रेम-दीवानी मीरा भगवान् कृष्ण की मोहिनी मूर्ति को अपने नेत्रों में बसाना चाहती हैं। इस पद में कृष्ण की मोहिनी मूर्ति का सजीव चित्रण है।
व्याख्या- कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा कहती हैं कि नन्दजी को आनन्दित करनेवाले हे श्रीकृष्ण! आप मेरे नेत्रों में निवास कीजिए। आपका सौन्दर्य अत्यन्त आकर्षक है। आपके सिर पर मोर के पंखों में निर्मित मुकुट एवं कानों में ऊली की आकृति के कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। मस्तक पर लगे हुए लाल तिलक और सुन्दर विशाल नेत्रों से आपका श्यामवर्ण का शरीर अतीव सुशोभित हो रहा है। अमृतरस से भरे आपके सुन्दर होंठों पर बाँसुरी शोभायमान हो रही है । आप हृदय पर वन के पत्र-पुष्पों से निर्मित माला धारण किये हुए हैं। आपकी कमर में बँधी करधनी में छोटी-छोटी घण्टियाँ सुशोभित हो रही हैं। आपके चरणों में बँधे हुँघरुओं की मधुर ध्वनि बहुत रसीली प्रतीत होती है । हे प्रभु! आप सज्जनों को सुख देनेवाले, भक्तों से प्यार करनेवाले और अनुपम सुन्दर हैं। आप मेरे नेत्रों में बस जाओ।
काव्यगत सौन्दर्य

1. यहाँ भगवान् कृष्ण की मनमोहक छवि का परम्परागत वर्णन किया गया है।
2. मीराबाई की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्तिभावना प्रकट हुई है।
3. भाषा-सुमधुर ब्रज।
4. शैली-मुक्तक काव्य की पद शैली है।
5. छन्द-संगीतात्मक गेय पद।
6. रस- भक्ति एवं शान्त।
7. अलंकार-मोर मुकुट मकराकृति कुण्डल' तथा 'मोहनि मूरति साँवरि सूरति' में अनुप्रास है।
8. भाव-साम्य-कविवर बिहारी भी मीरा की तरह कृष्ण के इस रूप को अपने मन में बसाना चाहते हैं –

"सीस मुकुट, कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
इहिं बानक मो मन सदा, बसौ बिहारीलाल॥"

2. पायो जी म्हैं तो राम रतन ..... जस गायो।
शब्दार्थ- अमोलक = अनमोल । **खेवटिया** = खेनेवाला। **भव सागर** = संसाररूपी सागर । **म्है** = मैंने।
सन्दर्भ – यह पद मीराबाई की **'पदावली'** से लिया गया है, जो हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित है।
प्रसंग- प्रस्तुत पद में मीराबाई भगवान् राम के नाम के महत्त्व की चर्चा करती हुई कहती हैं –
व्याख्या- मैंने भगवान् के नामरूपी रत्न सम्पदा को प्राप्त कर लिया। मेरे सच्चे गुरु ने यह अमूल्य वस्तु मुझ पर दया करके मुझे प्रदान की थी, मैंने उसे अंगीकार किया था। इस प्रकार मैंने गुरुदीक्षा के कारण कई जन्मों की

संचित पूँजी (पुण्य फल) प्राप्त कर ली और संसार की सारी मोह-मायाओं का त्याग कर दिया। यह राम नाम की पूँजी ऐसी विचित्र है कि यह खर्च करने पर भी कम नहीं होती और न इसे चोर हो चुरा सकते हैं। यह प्रतिदिन अधिक होती जाती है। मैंने इसी सत्यनाम (ईश्वर का नाम) रूपी नौका पर सवार होकर, जिसके केवट मेरे सच्चे गुरु हैं, संसाररूपी सागर को पार कर लिया है। अंत में मीराबाई कहती हैं कि गिर धरनागर श्रीकृष्ण भगवान् ही एकमात्र मेरे स्वामी हैं। मैं प्रसन्न होकर उनका गुणगान कर रही हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य

1. इस पद में भक्तिकालीन कवियों की परम्परा के अनुसार भगवान् के नाम के महत्त्व को बतलाया गया है।
2. मीरा कृष्ण की उपासिका हैं, किन्तु यहाँ 'राम' रतन धन की चर्चा करती हैं। यहाँ राम का तात्पर्य घट-घट व्यापी राम से है।
3. अलंकारअनुप्रास और रूपक।
4. भाषा-राजस्थानी मिश्रित ब्रज।
5. शैली-मुक्तक।
6. छंद-गेयपद।
7. रस-शान्त और भक्ति।

3. माई री मैं ..... जनम कौ कौल।

शब्दार्थ- छाने = छिपकर । **बजन्ता ढोल** = ढोल बजाकर, सबको जताकर, खुले आम । **मुँहघो** = महंगा । **सुंहघो** = सस्ता । **कौल** = वचन ।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मीरा द्वारा रचित **'पदावली'** से संकलित है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद में मीरा श्रीकृष्ण से अपने सच्चे प्रेम को निस्संकोच भाव से स्वीकार कर रही हैं।

व्याख्या- मीरा कहती हैं- मैंने तो अपने गोविन्द को मोल ले लिया है। लोग मेरे इस प्रेम-व्यापार पर नाना प्रकार के आक्षेप करते हैं। कोई कहता है कि मैंने श्रीकृष्ण को छिपकर अपनाया है और कोई कहता है कि मैंने उससे चुपचाप प्रेम-सम्बन्ध जोड़ा है, पर मैंने तो ढोल बजाकर-सभी को बताकर-उसे अपनाया है। कोई कहता है कि मेरा यह सौदा बड़ा महँगा (कष्टदायक) है और कोई कहता है कि मैंने श्रीकृष्ण को बड़े सस्ते में (सहज प्रयत्न से) पा लिया है, पर मैंने उसे सब प्रकार से परखकर, हृदयरूपी तराजू पर तौलकर मोल लिया है। चाहे उसे कोई काला कहे चाहे गोरा, मेरे लिए तो वह जैसा भी है, अमूल्य है, क्योंकि उसे हृदय जैसी मूल्यवान वस्तु के बदले खरीदा गया है। सभी जानते हैं कि मीरा ने कृष्ण को आँख बन्द करके-अंधविश्वास में लिप्त होकर स्वीकार नहीं किया है। उसने तो आँखें खोलकर, सब कुछ सोच समझकर उससे प्रीति सम्बन्ध जोड़ा है। मीरा कहती हैं-मेरे प्रभु पूर्वजन्म से मेरे साथ वचनबद्ध हैं, अत: उन्होंने मुझे दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

काव्यगत सौन्दर्य

1. मीरा और कृष्ण के पवित्र प्रेम-बन्धन की झाँकी इस पद में साकार हुई है।
2. भाषा सरस, सरल और मिश्रित शब्दावली युक्त ब्रजी है।
3. शैली-आत्मनिवेदनात्मक, भावात्मक तथा व्यंग्य का संस्पर्श लिये है।
4. अनेक मुहावरों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। रस-भक्ति। गुण-प्रसाद। छन्द-गेय पद।

4. मैं तो साँवरे ..... भगति रसीली जाँची॥

शब्दार्थ- साँची = सत्य । **ब्याल** = सर्प । **खारो** = नीरस, व्यर्थ । **काँची** = कच्ची, (क्षणभंगुर)। **जाँची** = प्रतीत हुई।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं मीराबाई द्वारा रचित **'पदावली'** से उद्धृत है।

प्रसंग- इस पद में मीरा भगवान् कृष्ण के प्रेम में निमग्न होकर पूर्णरूप से उन्हीं के रंग में रंग गयी हैं, इसलिए

https://www.evidyarthi.in/

संसार की अन्य किसी वस्तु में उनका मन नहीं लगता।
व्याख्या- मीरा कहती हैं कि मैं तो साँवले कृष्ण के श्याम रंग में रँग गयी हूँ अर्थात् उनके प्रेम में आत्मविभोर हो गयी हूँ। मैंने तो लोक-लाज को छोड़कर अपना पूरा श्रृंगार किया है और पैरों में सुँघरू बाँधकर नाच भी रही हैं। साधुओं की संगति से मेरे हृदय की सारी कालिमा मिट गयी है और मेरी दुर्बुद्धि भी सद्बुद्धि में बदल गयी है और मैं श्रीकृष्ण की सच्ची भक्त बन गयी हूँ। मैं प्रभु श्रीकृष्ण का नित्य गुणगान करके
कालरूपी सर्प के चंगुल से बच गयी हूँ अर्थात् अब मैं जन्म-मरण के चक्र से छूट गयी हूँ। अब कृष्ण के बिना मुझे यह संसार निस्सार और सूना लगता है, अतः उनकी बातों के अलावा अन्य बातें व्यर्थ लगती हैं। मीराबाई को केवल श्रीकृष्ण की भक्ति में ही आनन्द मिलता है, संसार की किसी अन्य वस्तु में नहीं।
काव्यगत सौन्दर्य

1. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की एकनिष्ठ भक्ति का सुन्दर चित्रण हुआ है।
2. कृष्ण की दीवानी मीरा को उनके बिना यह संसार निस्सार और सूना लगता है।
3. भाषा-राजस्थानी मिश्रित ब्रज
4. शैली-मुक्तक।
5. छन्द-गेय पद।
6. रस- भक्ति और शान्त।
7. गुण-माधुर्य ।
8. अलंकार-अनुप्रास, रूपक।।

5. मेरे तो गिरधर ..... तारो अब मोई।
शब्दार्थ-कानि = मर्यादा, प्रतिष्ठा। **ढिग** = समीप । **आणंद** = आनन्द । **राजी**
= प्रसन्न।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका मीरा द्वारा रचित **'पदावली'** से उद्धृत है।
प्रसंग- मीरा एकमात्र श्रीकृष्ण को ही अपना सर्वस्व घोषित कर रही हैं। संसार के सारे नाते तोड़कर, लोकलाज छोड़कर, केवल श्रीकृष्ण के प्रेम के आनन्द-पल का आस्वाद ले रही हैं।
व्याख्या- मीरा कहती हैं-अब तो मैं अपना नाता केवल एक श्रीकृष्ण से मानती हूँ और कोई भी मेरा इस संसार में अपना नहीं है। सिर पर मोरमुकुट धारण करनेवाले नटवर-नागर ही मेरे पति हैं। पिता, माता, भाई, बन्धु आदि से अब मेरा कोई नाता नहीं रहा। मैंने तो कृष्ण-प्रेम के लिए अपने कुल की प्रतिष्ठा को भी त्याग दिया है। अब मेरा कोई क्या कर लेगा? सभी कहते हैं कि मैंने सन्तों का सत्संग करके स्त्रियोचित लोक-लज्जा को भी तिलांजलि दे दी है। पर मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैंने अपनी कृष्ण-प्रेम की लता को अपने आँसुओं
से सींचकर (महान् कष्ट सहन करके) बढ़ाया है। अब तो यह प्रेम-लता बहुत फैल चुकी है, अब तो इस पर आनन्दरूपी फल लगनेवाले हैं। मुझे तो अब केवल प्रियतम कृष्ण की भक्ति में ही सुख मिलता है। सांसारिक विषयों को देखकर मेरा मन दु:खी होता है। मीराबाई कह रही हैं कि हे गिरिधर गोपाल ! अब आप अपनी दासी मीरा का उद्धार कीजिए और उसे अपनाकर धन्य बना दीजिए।
काव्यगत सौन्दर्य

1. श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम-भाव और भक्ति को मीरा ने हृदयस्पर्शी शब्दावली में साकार किया है।
2. अलंकार-अनुप्रास, रूपक ('प्रेम-बेलि' और 'आनन्द-फल') तथा पुनरुक्ति अलंकार हैं।
3. भाषी सरस, सरल, किन्तु भाव-वहन में पूर्ण समर्थ है।
4. शैली-आत्मनिवेदनात्मक एवं भावात्मक है। गुण-प्रसाद, छन्द-गेय पद।